शिक्षकों को आपस में अकादमिक चर्चाओं में सहयोग हेतु

Tap here to download
Podcast Audio

चर्चा पत्र

माह– जनवरी 2021

षष्ठम वर्ष अंक–8

Happy
new year
2021

राज्य परियोजना कार्यालय
समग्र शिक्षा राजीव गांधी शिक्षा मिशन छ.ग.

शिक्षा का अधिकार
सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

एजेंडा एक: सबका सीखना सुनिश्चित करना

शिक्षा का अधिकार क़ानून 2009 में सभी बच्चों को संतोषजनक और एकसमान गुणवत्ता वाली प्रारंभिक शिक्षा लेने का अधिकार दिया गया है। संतोषजनक और एकसमान गुणवत्ता वाली शिक्षा को परिभाषित करना आवश्यक है | इस हेतु एनसीईआरटी ने सन 2017 में प्रत्येक कक्षा एवं विषय के लिए लर्निंग आउटकम अथवा सीखने के प्रतिफल निर्धारित किए |

भले ही हम नो डिटेंशन नीति का पालन कर रहे हैं अर्थात हम सभी बच्चों को अगली कक्षा में जाने से रोक नहीं रहे हैं पर प्रत्येक कक्षा में कम से कम **कितना आ जाना चाहिए**, हमने यह निर्धारित किया हुआ है | हम सभी शिक्षकों एवं पालकों का कर्तव्य है कि **कक्षावार निर्धारित प्रतिफल को** उसी कक्षा में माहवार बांटकर समय सीमा निर्धारित कर **प्रत्येक बच्चों को उन पर महारत** हासिल करना सुनिश्चित कर सकें |

यह सोच एवं चिंतन हम और आप जब स्कूल में पढ़ते थे तब से बिलकुल अलग है | हमारे समय में यदि **तैंतीस प्रतिशत भी आ जाए** तो हम अगली कक्षा के लिए उत्तीर्ण कर दिए जाते थे | अर्थात ऐसी स्थिति में हम अगली कक्षा में पूर्व कक्षा के **सड़सठ प्रतिशत अज्ञान** को लेकर जा रहे हैं | परन्तु अब **लर्निंग आउटकम इस प्रकार से डिजाइन** किया गया है कि अपनी कक्षा के सभी निर्धारित प्रतिफल समय पर प्राप्त करते हुए आगे बढ़ते जाना है | **आधे-अधूरे ज्ञान** को लेकर अगली कक्षा में जाने से **अज्ञानता का बोझ** बढ़ता ही जाएगा ! ऐसी स्थिति में अगली कक्षा में जब **कुछ समझ में नहीं आयेगा** तो **ड्राप-आउट संख्या** बढ़ेगी |

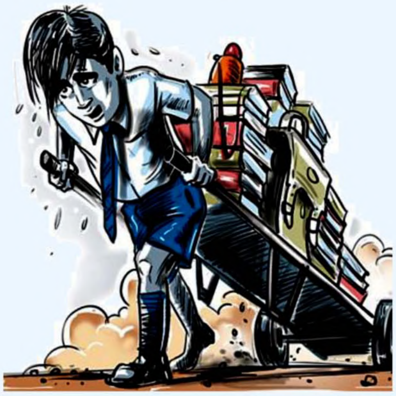

आपस में चर्चा करें कि

- **कक्षाओं में कैसे सभी बच्चों को निर्धारित दक्षताएं हासिल करवाई जाए ?**
- **प्रत्येक कक्षा के लिए निर्धारित लर्निंग आउटकम को हासिल करने किस प्रकार से टाइमलाइन निर्धारित किया जाए और उसका पालन किया जाए ?**
- **पीछे छूट रहे बच्चों को कौन-कौन सी विधियों का उपयोग कर उन्हें भी अन्य बच्चों के समान सीखने हेतु तैयार किया जाए ?**
- **बच्चों को घर पर रहकर अभ्यास करने के अवसर कैसे उपलब्ध करवाएं ?**

एजेंडा दो: नैदानिक परीक्षण और उपचारात्मक शिक्षण

जब आपको कोई स्वास्थ्य संबंधी परेशानी होती है तब आप डाक्टर के पास जाते हैं | डाक्टर आपसे आपकी परेशानी से संबंधित बहुत से प्रश्न पूछकर और कुछ परीक्षण यथा नब्ज देखना, थर्मोमीटर से तापमान देखना, वजन देखना, खून की जांच करना, एक्स-रे एवं अन्य आवश्यक जाँच कर परेशानी का कारण जानने का प्रयास करते हैं | यह **नैदानिक परीक्षण (diagnostic testing)** है | अब इस परीक्षण के परिणाम के आधार पर परेशानी के कारणों का पता कर उसे दूर करने का उपाय किया जाता है | विभिन्न प्रकार की दवाइयाँ, व्यायाम, परहेज एवं आपरेशन जैसे कुछ उपाय सुझाकर उपचार की प्रक्रिया तय की जाती है | उपचार पूरी तरह से नैदानिक परीक्षण के परिणामों के आधार पर होता है | इसी प्रकार बच्चों के सीखने में आ रही समस्याओं को ढूंढकर, पहचान कर उसे दूर करने हेतु किए जा रहे प्रयासों को **उपचारात्मक शिक्षण (Remedial Teaching)** के रूप में जाना जाता है |

चर्चा कर समझने का प्रयास करें कि क्या बिना नैदानिक परीक्षण के उपचारात्मक शिक्षण करना संभव है ? क्या आप ऐसा करते हैं ?

आप बच्चों को सीखने हेतु इनमें से कौन सा तरीका अपनाते हैं ?

- आप एक पाठ पढ़ाते हैं | उस पाठ पर आधारित लर्निंग आउटकम की पहचान करते हैं | पाठ पर आधारित अभ्यास के प्रश्न हल करवाते हैं | फिर आप अगले पाठ और उससे संबंधित लर्निंग आउटकम की प्राप्ति हेतु आगे बढ़ते हैं |
- आप बच्चों को एक पाठ सीखने हेतु बहुत सारी पूर्व तैयारी करते हैं | उस पाठ में निहित लर्निंग आउटकम को चिह्नांकित करते हैं | सभी बच्चे सीखने के बिन्दुओं को समय पर सीख जाएं, इस हेतु विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित करते हैं | बच्चे निर्धारित लर्निंग आउटकम को सीख गए अथवा नहीं, यह जानने आप आकलन करते हैं | आकलन के आधार पर ऐसे बच्चों की सूची बनाते हैं जो उस लर्निंग आउटकम को अच्छे से हासिल कर चुके हैं और ऐसे बच्चे जिनके साथ कुछ और देर तक अभ्यास करवाना है | आप पीछे छूट रहे बच्चों को सीख चुके बच्चों के साथ जोड़ी बनाकर एक दूसरे से सीखने के अवसर देते हैं | जब सभी बच्चे उस लर्निंग आउटकम को सीख जाएँ तब आप अगले लर्निंग आउटकम को हासिल करने आगे बढ़ते हैं |

आप एक सेकंड हैंड बाइक लेना चाहते हैं | आप उस गाडी को चलाकर देखते हैं | आपको उस बाइक में कुछ समस्याएं दिखाई देती है | जैसे हेडलाईट कमजोर होना, हार्न काम नहीं करना, साइलेंसर से अधिक आवाज आना | आप उस बाइक को लेकर मैकेनिक के पास जाते हैं | बाइक का उससे परीक्षण करवाकर उसे सुधारने का बजट बनवाकर सौदा पक्का होने पर उसे सुधारवा लेते हैं | इन दोनों गतिविधियों में नैदानिक परीक्षण और उपचारात्मक शिक्षण के करीब कौन-कौन सी गतिविधि है ?

यदि आपने सही समझ लिया तो आगे बढ़ते हैं वरना पुनः इन दोनों शब्दों को ध्यान से समझ लेने के बाद ही आगे बढ़ें |

नैदानिक परीक्षण के उपयोग-

1. सीखने की प्रक्रिया के बाधक कारणों को ढूंढ़ना
2. विद्यार्थियों एवं अभिभावकों को उचित सुझाव या निर्देशन देना
3. शिक्षक द्वारा अपने शिक्षण प्रक्रिया में सुधार लाना
4. कमजोर विद्यार्थियों की पहचान करना
5. विद्यार्थियों की विषयगत कठिनाईयों के कारण का पता करना
6. शिक्षण प्रक्रिया में सुधार हेतु उपचारात्मक शिक्षण की योजना बनाना
7. विद्यार्थियों की कमी जानने हेतु उचित आकलन प्रक्रिया अपनाना
8. पाठ्यक्रम तथा पाठ्य-वस्तु में कमियों के आधार पर परिवर्तन लाना जिससे वे विद्यार्थियों के लिये उपयोगी हो
9. शिक्षक तथा विद्यार्थियों के आत्म-विश्वास में वृद्धि होती है और वह आगे बढ़ने के लिये स्व-प्रेरणा संचालित होती है
10. इससे सुधारवादी दृष्टिकोण का प्रादुर्भाव होता है।

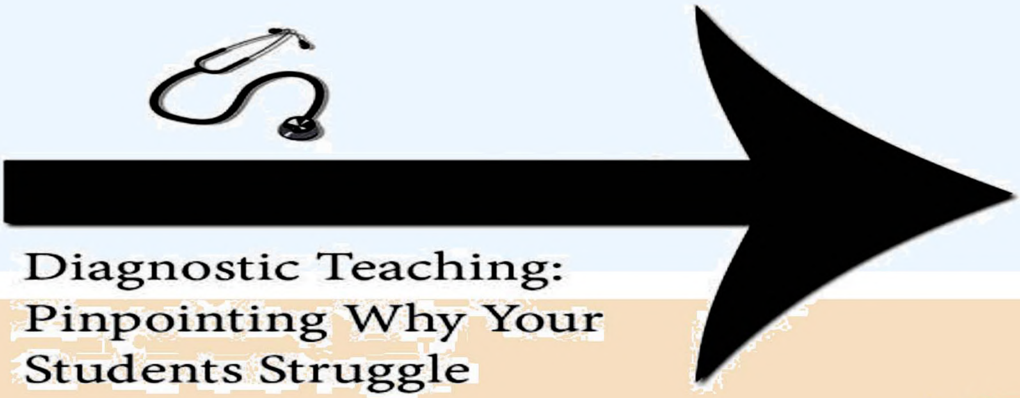

उपचारात्मक शिक्षण के उपयोग-

1. विद्यार्थियों की सामान्य व विशिष्ट कठिनाइयों के निराकरण हेतु
2. बालकों की क्षमता को उचित दिशा में मोड़ने में सहायक
3. छात्रों के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास और उनमें आत्मविश्वास जागृत करने हेतु
4. बालकों की व्यक्तित्व संबंधी समस्याओं का निराकरण करने हेतु
5. शिक्षण को रोचक, उद्देश्य पूर्ण एवं प्रभावशाली बनाने में सहायक
6. शिक्षक की प्रवृत्ति में सकारात्मक परिवर्तन आता है
7. उपचारात्मक शिक्षण से बालकों को अपने वातावरण से अनुकूलन करने में सहायता मिलती है
8. छात्रों द्वारा की जाने वाली त्रुटियों में सुधार के साथ-साथ भविष्य में होने वाली त्रुटियों से भी बचाव हो जाता है
9. बच्चों की उपलब्धि में सुधार के साथ-साथ उन्हें सीखने के सही तरीकों की जानकारी देने बाबत
10. मल्टीपल इंटेलिजेंस की जानकारी लेकर बच्चों को उनके इंटेलिजेंस के प्रकार के अनुरूप इनपुट देने की प्रवृत्ति विकसित किए जाने बाबत

आपके आसपास आप ऐसे बच्चों को देखते हैं जो सीखने के मामले में एक ही जगह में घूमते रहते हैं, आगे नहीं बढ़ पाते | आप कक्षा में एक के बाद एक अगले पाठ सिखाते जाते हैं पर ये कुछ मामूली मुद्दों पर समझ नहीं होने से आगे नहीं बढ़ पाते |

ऐसे बच्चों की पहचान (Diagnose) कर उन्हें कैसे अन्य बच्चों की भाँति सीखने के मामले में आगे (Remediation) बढ़ाएंगे ? इस संबंध में अलग अलग लर्निंग आउटकम को लेकर सुधारात्मक कार्यक्रम बनाने का प्रयास करें |

एजेंडा तीन: सीखने हेतु स्केफोल्डिंग (Scaffolding)

आपको दीवार पर ऊंची जगह पर एक फोटो टांगना है | वहां तक पहुँचने के लिए आपको एक सीढ़ी की आवश्यकता है | आप थोड़ी देर के लिए उस सीढ़ी का उपयोग कर फोटो को टांगने में सफल हो जाते हैं | यहाँ पर लक्ष्य या सीखना ऊंची दीवार पर फोटो टांगना है और इसके लिए आपने एक अस्थाई स्ट्रक्चर अर्थात सीढ़ी से सहयोग लिया है | इस प्रक्रिया को हम स्केफोल्डिंग कहते हैं | स्केफोल्डिंग के माध्यम से हम किसी चुनौती भरे काम को हल करने में सफलता प्राप्त कर सकते हैं |

आप बचपन में सायकल सीखना चाहते हैं | इस हेतु आप दो तरीके से सहायता ले सकते हैं | सायकल के दोनों तरफ चक्के वाले स्टेंड लगाकर गिरने से बचने के लिए अस्थाई व्यवस्था करते हैं या अपने पिताजी को सायकल पीछे से पकड़कर मदद करने को कहते हैं | इस प्रक्रिया को हम स्केफोल्डिंग कहते हैं |

वास्तव में यह शब्द बड़े भवन बनाते समय को मचान बनाया जाता है जिसका सहयोग लेकर कारीगर ऊंची दीवार में ईंट, प्लास्टर या पेंट कर सकते हैं | दीवार बनने के बाद इस अस्थाई स्ट्रक्चर को हटा लिया जाता है |

बच्चों को सिखाते समय स्केफोल्डिंग का उपयोग करते समय धीरे-धीरे सिखाने की जिम्मेदारी कम होती जाती है और बच्चे स्वयं सीखने की ओर आगे बढ़ते चले जाते हैं | जिस प्रकार आप पहले सायकल चलाने हेतु किसी की मदद लेते हैं पर धीरे-धीरे अभ्यास करने के बाद आप बिना किसी के सहयोग से सायकल चलाने लगते हैं | यही प्रक्रिया शिक्षकों को अपने विद्यार्थियों को सिखाते समय करनी चाहिए | (I do We Do You Do)

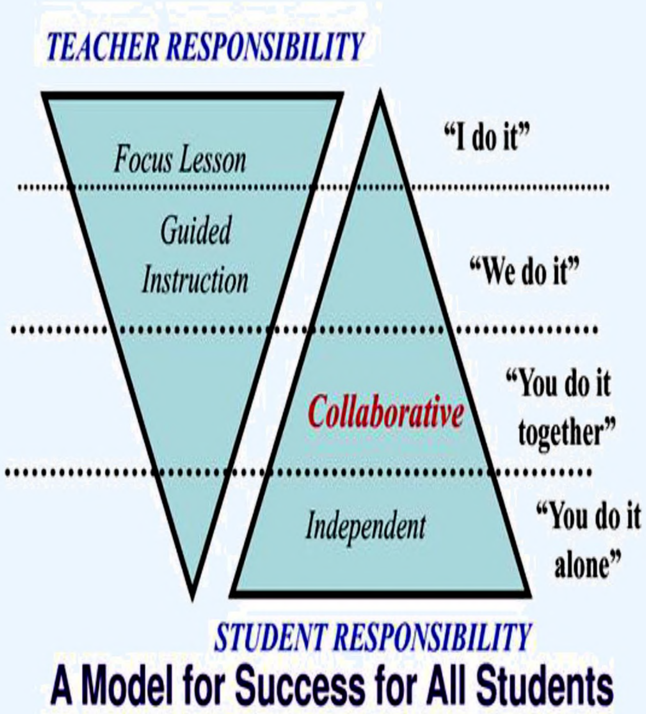

पाठ पढ़ते समय शिक्षक सबसे पहले अपने पाठ पर फोकस कर उसे सिखाने का प्रयास करता है (I do).

इसके बाद शिक्षक और बच्चे मिलकर एक साथ सीखने में भाग लेते हैं (We do)

अब शिक्षक सभी बच्चों के लिए कोई गतिविधि का आयोजन करता है जिसमें सब मिलकर सीखने में शामिल होते हैं (You do it together)

अंतिम चरण में बच्चों को स्वतंत्र रूप से सीखने का अवसर दिया जाता है (You do it alone)

आपने देखा कि सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में शिक्षकों की जवाबदेही से शुरू कर धीरे-धीरे सीखना बच्चों की जिम्मेदारी बनने लगती है |

कुछ बच्चों को स्केफोल्डिंग की आवश्यकता नहीं होती एवं कुछ स्केफोल्डिंग के माध्यम से

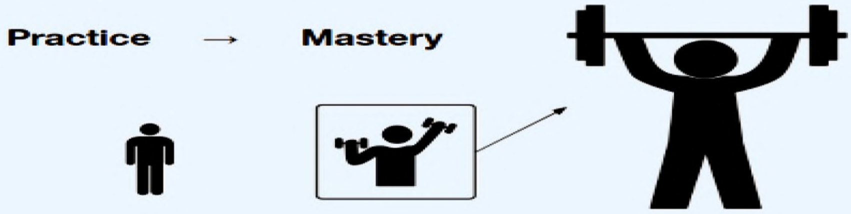

चीजों को समझकर पर्याप्त अभ्यास करने के बाद फिर सहायता आवश्यक नहीं होती |

स्केफोल्डिंग को आप इस चित्र के माध्यम से और समझ सकते हैं | पढ़ना सिखाने सबसे पहले शिक्षक स्वयं जोर से कक्षा में पढता है - फिर आवश्यकतानुसार शिक्षक और बच्चे साथ में पढ़ते हैं - अंत में बच्चे स्वयं स्वतंत्र वाचन करने लगते हैं |

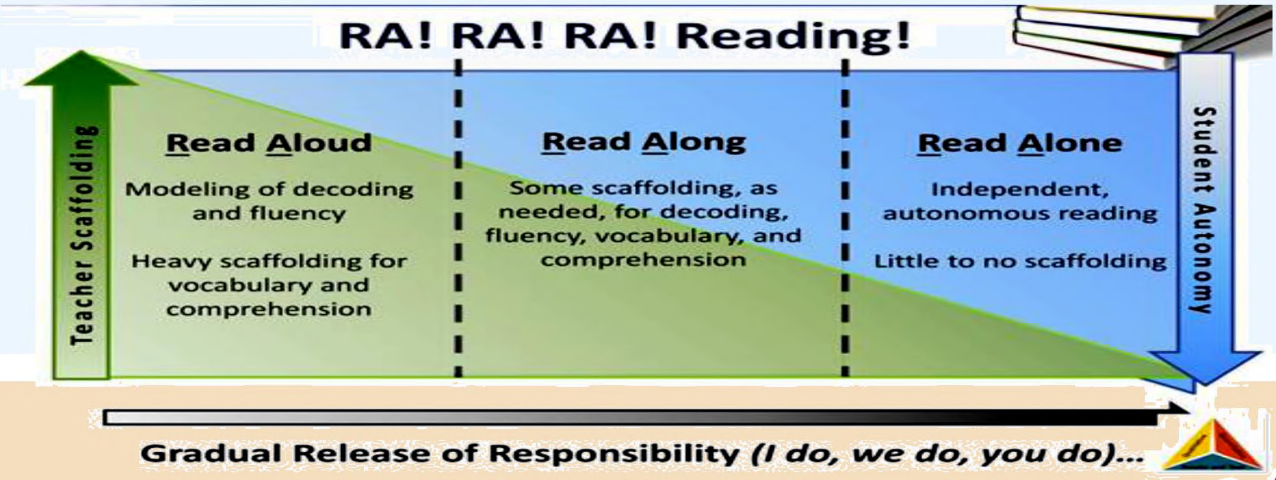

एजेंडा चार: सीखने हेतु बहु-स्तरीय शिक्षण (Multi-level teaching)

आप सभी इस बात से सहमत होंगे कि प्रत्येक बच्चे के सीखने की गति अलग-अलग होती है, उनके सीखने का तरीका भी अलग अलग होता है | एक ही कक्षा में बच्चों के सीखने का स्तर भी अलग-अलग होता है | अलग-अलग स्तरों के बच्चों को ध्यान में रखकर अपनी शिक्षण योजना बनाकर सीखने हेतु अवसर प्रदान करना "बहु-स्तरीय शिक्षण" कहलाता है | बहु-स्तरीय शिक्षण में इन बातों को ध्यान में रखकर योजना बनाई जानी होती है-

- नया सीखते समय उस विषय से संबंधित पूर्व ज्ञान की जानकारी आवश्यक है
- पूर्व ज्ञान के आधार पर लगभग समान स्तर के बच्चों को एक समूह में रखा जाए
- बच्चों का स्तर अलग अलग मुद्दों /विषयों के लिए अलग -अलग हो सकता है
- कक्षा में बैठक व्यवस्था काम की प्रवृत्ति के अनुसार होनी चाहिए-बड़ा गोल घेरा, छोटे-छोटे समूह, अर्ध-वृत्ताकार या फिर पंक्तियों में, दो-दो के समूह में
- विद्यार्थी तक बहुत अच्छे से सीखते हैं जब सीखने की प्रक्रिया में वे स्वयं शामिल होते हैं, जब सीखना उनके दैनिक जीवन के अनुभवों से जुडा हुआ हो
- विद्यार्थी-शिक्षक, विद्यार्थी-विद्यार्थी वार्तालाप, गतिविधियों को प्रोत्साहन
- शिक्षकों को प्रतिदिन बच्चों की गति एवं स्तर के अनुसार योजना बनानी चाहिए
- शिक्षक को यह जानकारी होनी चाहिए कि प्रत्येक बच्चे ने क्या सीखा, कितना सीखा और कैसे सीखा | ऐसी जानकारी हेतु प्रत्येक बच्चे के काम को रोज देखना होगा, उसे लिखित में अंकन करना होगा ताकि प्रगति याद न रखना पड़े
- सीखने-सिखाने के मामले में बच्चों को निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल करें
- विद्यार्थी तब बेहतर सीखते हैं जब वह अपने ज्ञान को स्वयं निर्मित/सृजित करते हैं

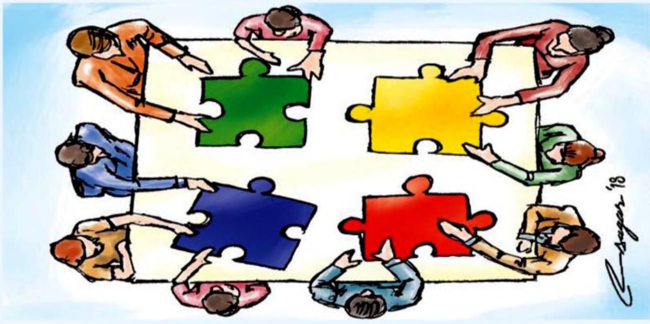

बच्चों के आकलन के परिणामों के आधार पर उनके स्तर बनाकर एक दूसरे से सीखने के अवसर देने की परंपरा आपके संकुल की कक्षाओं में कैसे स्थापित करेंगे ? ऐसा करने से क्या-क्या लाभ बच्चों/ शिक्षकों को मिल सकेंगे ?

एजेंडा पांच: सीखने के लिए संसाधन

हमारी शालाओं में बच्चों को सीखने एवं शिक्षकों को सिखाने में सहयोग हेतु आवश्यक संसाधन की कमी नहीं है | बस आवश्यकता है उनका सही एवं लाजिकल तरीके से उपयोग सुनिश्चित किया जाए | आपकी शालाओं में बच्चों के सीखने हेतु निम्नलिखित संसाधनों का उपयोग करना सुनिश्चित करें -

एनसीईआरटी विज्ञान एवं गणित किट/संपर्क गणित किट/ मुस्कान पुस्तकालय/ शाला अनुदान से तैयार सहायक सामग्री/.यूथ एवं इको क्लब अनुदान/ अभ्यास पुस्तिकाएं/ स्थानीय भाषा में विभिन्न पठन सामग्री एवं भाषा सेतु सहायिका/ NAS प्रेक्टीज पुस्तिका-कक्षा तीसरी-पांचवीं-आठवीं-दसवी/ सरल अभ्यास किट/निखार वर्कशीट्स- कक्षा छठवीं से नवमीं /क्रिएटिव लेखन/कर्सिव लेखन अभ्यास सामग्री/ cgschool.in में कक्षावार-पाठवार उपलब्ध वीडियो एवं अन्य सामग्री/ इतना तो हमारे बच्चे कर सकते हैं !

एजेंडा छह: अगले सत्र में कैसे भेजें ?

राज्य में आप सभी सक्रिय शिक्षकों के सहयोग से पढई तुंहर दुआर के माध्यम से बच्चों के सतत सीखने की प्रक्रिया जारी रही है | इस सत्र में कक्षा पहली के बच्चों ने शाला का मुंह नहीं देखा | बच्चों की जो भी पढाई हुई वो शिक्षा सारथी, सक्रिय शिक्षक एवं पालकों के सहयोग से संपन्न हो सकी | आप इस बात से सहमत होंगे कि किसी कक्षा का लर्निंग आउटकम नहीं आए तो अगली कक्षा में बहुत दिक्कतें हो सकती है | इसलिए अगले सत्र के पहले हमें इस दिशा में काम करना आवश्यक होगा -

- बच्चों को छोटे-छोटे प्रोजेक्ट कार्य
- अभ्यास पुस्तिकाओं पर कार्य
- घर में रहकर कार्य करने हेतु वर्कशीट्स
- बड़ी कक्षाओं के बच्चों से सीखना
- सरल/निखार कार्यक्रम को लागू करना

संकुल की बैठक में चर्चा कर तय करें कि शेष बचे समय का बेहतर प्रबन्धन कर सभी बच्चों को अगली कक्षा के लिए कैसे तैयार किया जाए ?

एजेंडा सात: नवीन संकुलों का गठन और मानिटरिंग में कसावट

राज्य में पहली बार संकुलों की संख्या को दुगुने से भी अधिक करते हुए इसे हाई/हायर सेकन्डरी शालाओं के साथ जोड़ दिया गया है | अब प्रत्येक हाई/हायर सेकन्डरी स्कूल के साथ एक अथवा दो संकुल संलग्न होंगे | प्राचार्य, शाला संकुल अपने संकुल के भीतर की सभी शालाओं में बच्चों की गुणवत्ता सुधार के लिए पूर्णतः उत्तरदाई होंगे | उनकी प्रमुख जिम्मेदारी इस प्रकार होगी-

- विभिन्न कक्षाओं में निचली कक्षाओं से कक्षा अनुरूप दक्षताएँ हासिल कर बच्चे आगे बढ़ सकें, इस हेतु लंबी एवं लघु अवधि की योजना बनाकर क्रियान्वयन करते हुए उनकी नियमित मानिटरिंग करना
- अपने शाला संकुल की उच्च प्राथमिक शाला से किसी ऐसे शिक्षक को संकुल समन्वयक की जिम्मेदारी देना जो स्वयं अपनी शाला को संकुल की अन्य शालाओं के लिए प्रेरक शाला के रूप में प्रदर्शित कर सके
- शासन की विभिन्न गुणवत्ता सुधार संबंधी योजनाओं को अपने संकुल समन्वयकों के माध्यम से तत्काल जमीनी स्तर पर लागू करना
- संकुल के भीतर की आंगनबाडी से लेकर हायर सेकन्डरी स्तर तक की शालाओं में कार्यरत शिक्षकों का प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी के माध्यम से सतत क्षमता विकास कार्यक्रम
- शिक्षकों / संकुल समन्वयकों को उनका अधिकतम समय बच्चों को सीखने हेतु प्रेरित करने में लगवाना एवं जानकारियों एवं अनावश्यक कागजी कार्यवाहियों से उन्हें मुक्त रखने हेतु प्रयत्न करना
- शाला संकुल के अंतर्गत सभी स्कूल जाने योग्य बच्चों को नियमित स्कूल भेजने, शाला त्यागी-अप्रवेशी बच्चों को प्रवेश देकर उन्हें आयु-अनुरूप कक्षाओं हेतु तैयार करना एवं शाला समय का बेहतर उपयोग
- अपने शाला संकुल के समस्त आवश्यक आंकड़ों के एक बार एकत्र कर अपने पास रखना ताकि बार-बार शालाओं से जानकारी न लेना पड़े
- विभिन्न शालाओं/शिक्षकों की समस्त जानकारियों को लेकर/ अवलोकन कर उनमें निरंतर सुधार हेतु आवश्यक कार्यवाहियां करना
- सेकन्डरी शिक्षा का लोकव्यापीकरण (Universalization of Secondary Education) के लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में कार्य करना

एजेंडा आठ: संकुल समन्वयकों की बदलती भूमिका

संकुल समन्वयकों का पद जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (DPEP) के अंतर्गत आज से लगभग पच्चीस वर्ष पहले सृजित किया गया था | उनसे अपेक्षा की गयी थी कि वे अपने संकुल की समस्त शालाओं में शिक्षकों का सतत क्षमता विकास करेंगे एवं सीखने-सिखाने की गुणवत्ता में आशातीत बढ़ोत्तरी होगी | अब इस नवीन मोडल में जिम्मेदारी को विकेन्द्रीकृत कर शाला संकुल के प्राचार्य को जवाबदेही एवं संकुल समन्वयक को इस जिम्मेदारी की प्राप्ति में सहयोग देने एक नहीं भूमिका सौंपी जा रही है | इसके अंतर्गत संकुल समन्वयक के संबंध में निम्नलिखित सुझाव हैं-

वर्तमान में कार्य कर रहे संकुल समन्वयक-

- यदि ये प्राथमिक स्तर से हैं और बेहतर प्रदर्शन कर रहे हैं तो इन्हें जारी रखा जाए
- यदि ये आगे इस जिम्मेदारी हेतु सहमत नहीं हैं या अपेक्षित दक्षताएं नहीं रखते तो नए संकुल समन्वयक उच्च प्राथमिक स्तर से ही लिए जाएंगे | तकनीकी ज्ञान आवश्यक है
- इनके पास अब अधिकतम नौ शालाओं की जिम्मेदारी ही होगी
- इन्हें अपनी कक्षा में नियमित अध्यापन करते हुए अपने शाला को संकुल की आदर्श शाला के रूप में स्थापित कर अन्य लोगों को प्रेरित करना होगा

नए नियुक्त हो रहे संकुल समन्वयक

- शाला संकुल के प्राचार्य संकुल के समस्त शिक्षकों से चर्चा एवं संबंधित की पृष्ठभूमि, कार्य-कुशलता, अध्यापन-प्रशिक्षण-तकनीकी कौशल को ध्यान में रखते हुए संकुल के भीतर की किसी बेहतर शाला से उच्च प्राथमिक स्तर के शिक्षक का चयन करेंगे
- चयनित उच्च प्राथमिक शिक्षक का सतत क्षमता विकास कार्यक्रम होगा अतः इन्हें बार-बार बदलना संभव नहीं होगा | अतः चयन सावधानी से करें | उच्च प्राथमिक स्तर की महिला शिक्षिका इस कार्य हेतु इच्छुक हों तो उन्हें भी प्राथमिकता दी जा सकती है

शाला संकुल व्यवस्था में संकुल समन्वयकों की भूमिका

- ये समग्र शिक्षा के अंतर्गत जमीनी स्तर पर शिक्षा के लोकव्यापीकरण से संबंधित विभिन्न शैक्षिक कार्यों के क्रियान्वयन के लिए शाला संकुल प्राचार्य को आवश्यक सहयोग देंगे
- ये स्वयं पहले अपनी शाला को एक आदर्श शाला के रूप में विकसित करते हुए बच्चों के अपेक्षित दक्षता का विकास करते हुए अपने संकुल के अन्य शिक्षकों को भी अपनी अपनी शाला को आदर्श शाला के रूप में विकसित करने हेतु एक मेंटर की भूमिका निभायेंगे
- अपने संकुल के सभी शिक्षकों को सोशियल मीडिया से जोड़कर एक सक्रिय प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी बनाकर उनके माध्यम से कक्षागत प्रक्रियाओं में सुधार लाएंगे
- अपने संकुल के शिक्षकों एवं बच्चों का अधिकतम समय सीखने-सिखाने में लगायेंगे

एजेंडा नौ: इस माह शिक्षकों से अपेक्षाएं

- बच्चों के साथ उपचारात्मक शिक्षण के नवाचारी तरीके अपनाकर उनकी उपलब्धि में सुधार एवं अपनाए तरीके का दस्तावेजीकरण
- अधिक से अधिक सक्रिय सदस्यों को शामिल कर अपने प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी के माध्यम से विभिन्न कार्यों हेतु लक्ष्यों का निर्धारण
- बच्चों के लिए भेजे गए विभिन्न अभ्यास सामग्री को बच्चों को घर पर उपलब्ध करवाते हुए उस पर नियमित अभ्यास कर अगली कक्षा के लिए तैयार करना
- अपने जिले के टेलीग्राम ग्रुप में सभी शिक्षकों को अनिवार्यतः जुड़कर अपडेटेड जानकारी लेते रहना और उसमें सार्थक सहयोग देना
- प्रतिदिन अपने आनलाइन/ मोहल्ला कक्षाओं/ लाउडस्पीकर कक्षाओं/ बुल्टू के बोल से संबंधित कार्यों की जानकारी हैश-टेग #padhaitumharduar के साथ ट्विटर के माध्यम से साझा कर लोकप्रिय करना
- हमारे नायक के लिए तय किए गए मुद्दे पर फोकस कर कार्य करते हुए अपना विवरण लिंक पर तत्काल भेजने की व्यवस्था
- सरल एवं निखार कार्यकम को बच्चों के लिए लागू कर सुधार करना

एजेंडा दस: इस माह संकुल से अपेक्षाएं

- संकुल स्तर पर प्रतियोगिताओं के आधार पर चयनित खिलौनों को शाला में उपयोग हेतु आइडिया साझा करना और शाला स्तर पर तैयार करवाना
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर विभिन्न स्तरों पर परिचर्चाओं का आयोजन करना
- राज्य से भेजे गए अभ्यास सामग्री पर नियमित कार्य हेतु व्यवस्थाएं
- अपने अपने पीएलसी का cgschool.in में पंजीयन कर उसमें अधिक से अधिक सक्रिय सदस्यों को शामिल करना
- शाला संकुल के प्राचार्य द्वारा उनके संकुल का वेबसाईट में पंजीयन एवं शाला संकुल के भीतर के सभी शालाओं/ शिक्षकों द्वारा पंजीयन
- संकुल समन्वयकों द्वारा सरल कार्यक्रम के अंतर्गत कक्षा तीन से पांच के कम से कम पन्द्रह बच्चों को कम से कम पन्द्रह दिन अध्यापन कर रिपोर्टिंग
- **“इतना तो हमारे बच्चे कर सकते हैं”** की डाटा का विश्लेषण कर बच्चों के कमजोर क्षेत्रों की पहचान कर उपचारात्मक शिक्षण